INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 3, March 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

पर्यावरण संरक्षण : वर्तमान समय की आवश्यकता

Arya.S.Pillai

Department of Hindi / University Institute of Technology, kollam, India

सारांश

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। मानव, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे तथा सभी जीवित प्राणी पर्यावरण पर ही निर्भर हैं। आज के आधुनिक युग में औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा भूमि प्रदूषण जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। यदि समय रहते पर्यावरण की रक्षा के लिए उचित कदम नहीं उठाए गए, तो मानव जीवन के लिए गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। इस लेख में पर्यावरण के महत्व, प्रदूषण के कारणों तथा पर्यावरण संरक्षण के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई है।

पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व का मूल आधार है। मानव, पशु, पक्षी, वनस्पति तथा सूक्ष्म जीव सभी पर्यावरण पर निर्भर करते हैं। पर्यावरण हमें जीवन के लिए आवश्यक वायु, जल, भोजन और प्राकृतिक संसाधन प्रदान करता है। प्राचीन समय में मनुष्य प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन व्यतीत करता था, जिसके कारण पर्यावरण स्वच्छ और संतुलित बना रहता था।

लेकिन आधुनिक युग में औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैज्ञानिक प्रगति तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होने लगा है। इसके परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत का क्षरण तथा प्राकृतिक आपदाएँ भी पर्यावरणीय असंतुलन के कारण उत्पन्न हो रही हैं।

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एक वैश्विक चिंता का विषय बन गया है। यदि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए उचित कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में मानव जीवन के लिए गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। इस शोध लेख में पर्यावरण के महत्व, प्रदूषण के प्रमुख कारणों, उसके प्रभावों तथा पर्यावरण संरक्षण के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है।मुख्य शब्द: पर्यावरण, प्रदूषण, संरक्षण, प्रकृति, विकास

मुख्य शब्द: पर्यावरण, प्रदूषण, संरक्षण, प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण

1. प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – "परि" और "आवरण"। इसका अर्थ है हमारे चारों ओर का वातावरण। इसमें वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे, जीव-जंतु तथा मानव जीवन शामिल हैं। पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्राचीन काल में मानव प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन व्यतीत करता था। लेकिन आधुनिक विकास और तकनीकी प्रगति के कारण प्रकृति का अत्यधिक दोहन होने लगा है। इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई है।पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्राकृतिक संसाधन जैसे जल, वायु, मिट्टी और वनस्पति मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इन संसाधनों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

प्राचीन काल में मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके जीवन व्यतीत करता था। उस समय प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सीमित और संतुलित था। लेकिन आधुनिक युग में तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकी विकास के कारण प्रकृति का अत्यधिक दोहन होने लगा है।

आज पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या बन चुका है। कारखानों से निकलने वाला धुआँ, वाहनों से उत्पन्न गैसें, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग और वनों की कटाई जैसे कारण पर्यावरण को लगातार नुकसान पहुँचा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ रही हैं।

इस परिस्थिति में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। यदि हम पर्यावरण की रक्षा नहीं करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण के महत्व को समझे और उसके संरक्षण के लिए सक्रिय भूमिका निभाए।

2. पर्यावरण का महत्व

पर्यावरण के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यह हमें शुद्ध वायु, स्वच्छ जल और भोजन प्रदान करता है। पेड़-पौधे कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण करके ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जो मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इसके अलावा पर्यावरण जलवायु को नियंत्रित करता है और प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखता है। यदि पर्यावरण संतुलित रहेगा तो पृथ्वी पर जीवन भी सुरक्षित रहेगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण की रक्षा करे।

3. पर्यावरण प्रदूषण के कारण

आज के आधुनिक युग में पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गया है। मानव की विभिन्न गतिविधियों के कारण पर्यावरण लगातार प्रदूषित हो रहा है। इसके कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1.औद्योगीकरण

औद्योगिक विकास के कारण कारखानों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इन कारखानों से निकलने वाला धुआँ, रासायनिक गैसें और अपशिष्ट पदार्थ वायु तथा जल को प्रदूषित करते हैं। कई उद्योग अपने कचरे को नदियों और जलाशयों में छोड़ देते हैं, जिससे जल प्रदूषण बढ़ता है।

3.2 वाहनों की बढ़ती संख्या

आज परिवहन के साधनों जैसे कार, बस, ट्रक और मोटरसाइकिल की संख्या बहुत अधिक हो गई है। इन वाहनों से निकलने वाली गैसें जैसे कार्बन मोनोऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड वायु प्रदूषण का मुख्य कारण हैं।

2.वनों की कटाई

वनों की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। पेड़-पौधे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। जब पेड़ों की संख्या कम हो जाती है, तो वायु की गुणवत्ता खराब हो जाती है और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या बढ़ती है।

3.4 प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग

प्लास्टिक का उपयोग आज लगभग हर क्षेत्र में हो रहा है। यह आसानी से नष्ट नहीं होता और लंबे समय तक पर्यावरण में बना रहता है। इससे भूमि और जल दोनों प्रदूषित होते हैं।

3. जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों की मांग बढ़ रही है। अधिक आवास, उद्योग और परिवहन की आवश्यकता के कारण पर्यावरण पर दबाव बढ़ता है।

4.रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक

कृषि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग मिट्टी और जल को प्रदूषित करता है। इससे भूमि की उर्वरता भी कम हो जाती है और पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है।

3.7 शहरीकरण

तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण जंगलों और कृषि भूमि को नष्ट करके शहरों का विस्तार किया जा रहा है। इससे प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन बिगड़ जाता है और प्रदूषण बढ़ता है।

5.पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव

पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव मानव जीवन तथा प्रकृति दोनों पर पड़ता है।

वायु प्रदूषण से सांस संबंधी रोग बढ़ते हैं।

जल प्रदूषण से पीने योग्य पानी की कमी हो जाती है।

भूमि प्रदूषण से कृषि उत्पादन कम हो जाता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ रही हैं।

यदि यही स्थिति बनी रही तो भविष्य में पृथ्वी पर जीवन कठिन हो जाएगा।

6. पर्यावरण संरक्षण के उपाय

पर्यावरण की रक्षा के लिए हमें कई महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए।

अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

प्लास्टिक के उपयोग को कम करना चाहिए।

प्रदूषण फैलाने वाले कारखानों पर नियंत्रण रखना चाहिए।

जल और बिजली का सही उपयोग करना चाहिए।

लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलानी चाहिए।

सरकार के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक को भी इस दिशा में अपना योगदान देना चाहिए।

निष्कर्ष

पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन का मूल आधार है। मानव, पशु, पक्षी और सभी जीवित प्राणी अपने अस्तित्व के लिए पर्यावरण पर निर्भर करते हैं। लेकिन आधुनिक युग में औद्योगीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण पर्यावरण का संतुलन लगातार बिगड़ता जा रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याएँ मानव जीवन और प्रकृति दोनों के लिए गंभीर खतरा बन चुकी हैं।

यदि पर्यावरण को सुरक्षित नहीं रखा गया, तो भविष्य में पृथ्वी पर जीवन के लिए अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है। सरकार के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह पर्यावरण की रक्षा के लिए जागरूक और जिम्मेदार बने।

वृक्षारोपण, जल संरक्षण, प्लास्टिक के उपयोग को कम करना और स्वच्छता बनाए रखना जैसे छोटे-छोटे प्रयास भी पर्यावरण को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके साथ ही लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना भी अत्यंत आवश्यक है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यदि मानव प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर विकास करेगा और पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करेगा, तो एक स्वच्छ, स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण का निर्माण संभव होगा। यही आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ा उपहार होगा।

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। इसके बिना जीवन संभव नहीं है। आज प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण पर्यावरण को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। इसलिए हमें पर्यावरण की रक्षा के लिए जागरूक होना चाहिए और प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीना चाहिए। यदि हम आज पर्यावरण को बचाने के लिए प्रयास करेंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित और स्वच्छ पृथ्वी मिल सकेगी।

संदर्भ (References)

पर्यावरण अध्ययन – NCERT पुस्तक

शर्मा, आर. (2019). पर्यावरण और मानव जीवन

सिंह, वी. (2021). पर्यावरण संरक्षण के उपाय

विभिन्न पर्यावरण संबंधी शोध लेख

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.